'सरोज – स्मृति': एक शोक गीत

निराला की लघु – सादृ कविता 'सरोज-स्मृति' शोक गीत की शैली में रचित है, जिसमें उन्होंने सरोज के असमय देहावसान से उत्पन्न करुण शोकमयी भावनाओं को 'एलेजी' (Ellegy) के गुण-गंध से संयुक्त कर उपस्थित किया है। इसमें जीवन के कड़वे यथार्थ से अद्भुत कवि का भावबोध इतना गहरा और मार्मिक है कि पाठक का मन बरबस अभिभूत हो जाता है। अनुभूतियों की इतनी मार्मिक अतिशयता और उनका ऐसा खुला तथा बेबाक प्रकाशन अन्यत्र प्रायः दुर्लभ ही है। रचना का विषय एवं उसका भाव- संयोजन अपना प्रकृत- पथ अपनाकर इस तरह चले हुए कि कविता प्रभावान्विति की दृष्टि से अप्रतिम हो गई है। (कुछ समीक्षकों की दृष्टि में इस कविता में एकान्विति का अभाव है, किन्तु सच पूछा जाए तो इस कविता के कथ्य की भावभूमि इतनी सर्वग्रासी थी कि कलात्मक सजगता के लिए पूरा अवकाश रह जाना ही अस्वाभाविक रहता और रूप – गठन के प्रति अतिशय सतर्कता विषयवस्तु की प्रकृति के अनुरूप ही होती।)

'सरोज-स्मृति' को हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ शोकगीत कहने की अपेक्षा अद्वितीय शोकगीत कहना अधिक उपयुक्त होगा। सर्वश्रेष्ठता में कहीं न कहीं तुलनात्मकता अन्तर्निहित है, पर 'सरोज- स्मृति' के समतुल्य कोई रचना न तो प्राचीन काव्य में है और न आधुनिक काव्य में। शोकगीत की

प्रिया ही हिन्दी के लिए नवीन है। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में शोक करुण-रस का स्थायी भाव स्वीकृत है किन्तु हम यह भी तो जानते हैं कि भवभूति के कथन "एको रसः करुण एव" के बावजूद करुण रस भारतीय काव्य का गौण रस ही रहा है। विरह के प्रसंग में जब शोक अभिव्यक्त हुआ है तो वह श्रृंगार का उपांग बन गया है, करुणा की उदात्तता तक वह नहीं पहुँच पाया। दूसरी बात, प्रिया के अतिरिक्त किसी अन्य नारी-रूप को काव्य का विषय ही कवियों ने आमतौर पर नहीं बनाया, और यदि बनाया भी तो उसके जीवन की चर्चा की, मरण की प्रायः नहीं, और मरणोपरांत श्रद्धेयों को श्रद्धांजलियाँ अर्पित करने की एवं सामान्यों को भुला देने की रीति प्रचलित रही है यों तो वात्सल्य का आधुनिक काव्य में अल्प मात्रा में चित्रण हुआ, यदि कहीं वह हुआ भी तो पुत्र-केन्द्रित होकर। सूर ने भी शिशु कृष्ण को ही अपनी वात्सल्यमयी रचना का केन्द्र बनाया, शिशु राधा को नहीं पुरुष प्रधान मध्यकालीन दृष्टि क्रमशः परिष्कृत होते हुए भी निराला के काल तक इतनी परिष्कृत नहीं हुई थी कि पुत्री को पुत्र का ~~स्थान~~ स्थानापन्न मान ले, इसीलिए पुत्री-केन्द्रित 'सरोज-स्मृति' को न केवल अद्वितीय रचना माना गया है बल्कि समस्त भारतीय कवि दृष्टि एवं सांस्कृतिक सामाजिक परंपरा को देखते हुए एक विलक्षण कृति मानी गई है। बालिका को काव्य-विषय बनाने का थोड़ा-प्रयास स्वर्गीय सुभद्रा कुमारी चौहान ने भी किया था। कोई दसेक वर्ष पूर्व स्वर्गीय

नामक एक संकलन प्रकाशित कराया था, परंतु स्वर्गीय चौहान के वात्सल्यप्रधान मुक्तक और स्वर्गीय श्री पंत की 'शशि की तरी' 'सरोज-स्मृति' से कदापि तुलनीय नहीं है

श्री सुमित्रा नंदन पंत ने भी एक पुत्रीवत प्रतिपालिता कन्या को आधार बनाकर उसके आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करते हुए "शशि की तरी"# 'सरोज-
म. स्मृति' से कदापि तुलनीय नहीं है।

'सरोज-स्मृति' को मात्र शोक गीत कहना भी अन्याय जैसा जान पड़ता है। यह ठीक है कि पुत्री सरोज का असामयिक निधन ही निराला की इस रचना की प्रेरणा है, लेकिन इसमें जो व्यंग्य है, जो संघर्ष-कथा है, जो आक्रोश है, उन सबको सम्मिलित मात्रा शोक से कहीं अधिक है।

निराला और सरोज का संबंध बाह्यतः पिता-पुत्री का संबंध है, किन्तु कवि निराला की यह आत्मजा उसके लिए मात्र पुत्री नहीं है, संतति संज्ञा नहीं है, अपितु विधुर निराला के तथाकथित गार्हस्थ्य जीवन में वह राग और विराग दोनों का कारण है। सरोज दिवंगता मनोरमा की जीवित प्रतिमूर्ति है, स्मृति है, हृदय के हर्ष एवं अभाव के बोध की केन्द्रबिन्दु है। वही दायित्व है, वही बोझ है, वही कर्तव्य की प्रेरणा है, वही संघर्ष की प्रतिज्ञा है, एकाकी जीवन का आधार भी वही है, इसीलिए उसका निधन परिवार के किसी सदस्य का चला जाना नहीं है, बल्कि परिवार के केन्द्र का टूट जाना है। सरोज अगर इस तरह असमय नहीं मरी होती तो संभवतः निराला इतने निर्बन्ध न हुए होते, इतने उद्दाम न हुए होते और इतने विद्रोही न हुए होते। जिन दो असामयिक देहान्तों ने निराला को

झकझोरा है उनमें प्रथम है पत्नी का देहांत और द्वितीय है पुत्री का देहांत। पत्नी के निधन ने उनके शृंगार को दर्शन से मंडित कर दिया और सरोज के निधन ने उनके आत्मसंघर्ष को समष्टि-संघर्ष के साथ जोड़ दिया। पत्नी मनोहरा की मृत्यु प्रेमी पति के जिस कठोर अन्तर को द्रवित न कर सकी उसे पुत्री सरोज की मृत्यु ने चूर-चूर कर दिया। सरोज के शब्दों में उसका मरण मरण नहीं, ज्योतिः शरण-तरण' था और कवि निराला जिसके लिए सरोज जीवित कविता थी उसका ज्योतिस्वरण अभाव की उदात्त बना गया। उनके अंधकारावृत्त पथ के लिए 'सरोज-स्मृति' ज्योतिकारी बन गई। सरोज के लिए निराला पिता ही नहीं माता भी थे और मातृ-वंचिता इस पुत्री के लिए निराला को वह सब कुछ करणीय-अकरणीय करना पड़ा है जो एक सामान्य पिता के नियति में नहीं होता, पर उससे भी बड़ी बात है निस्संगता के साथ इस संपूर्ण नियति को पाठकों तक संप्रेषित कर देना अपनी लेखनी से युवती पुत्री का रूप-वर्णन एवं सुहागरात में उसकी पहली सेज सजाने का अनुभव का वर्णन ऐसे प्रसंग हैं जिनकी अपेक्षा किसी भारतीय कवि से सहज संभव नहीं कवि और पिता एक-दूसरे की जगह ले लेते हैं। पिता सरोज के जीवन का चित्रण न कर पाता, वह कवि ने किया। निस्संगता या विगत को पुनर्जीवित कर अपने से अलग उसे स्वतंत्र सत्ता प्रदान कर देना यदि श्रेष्ठ कविता की पहचान है तो 'सरोज स्मृति' श्रेष्ठ कविता है,

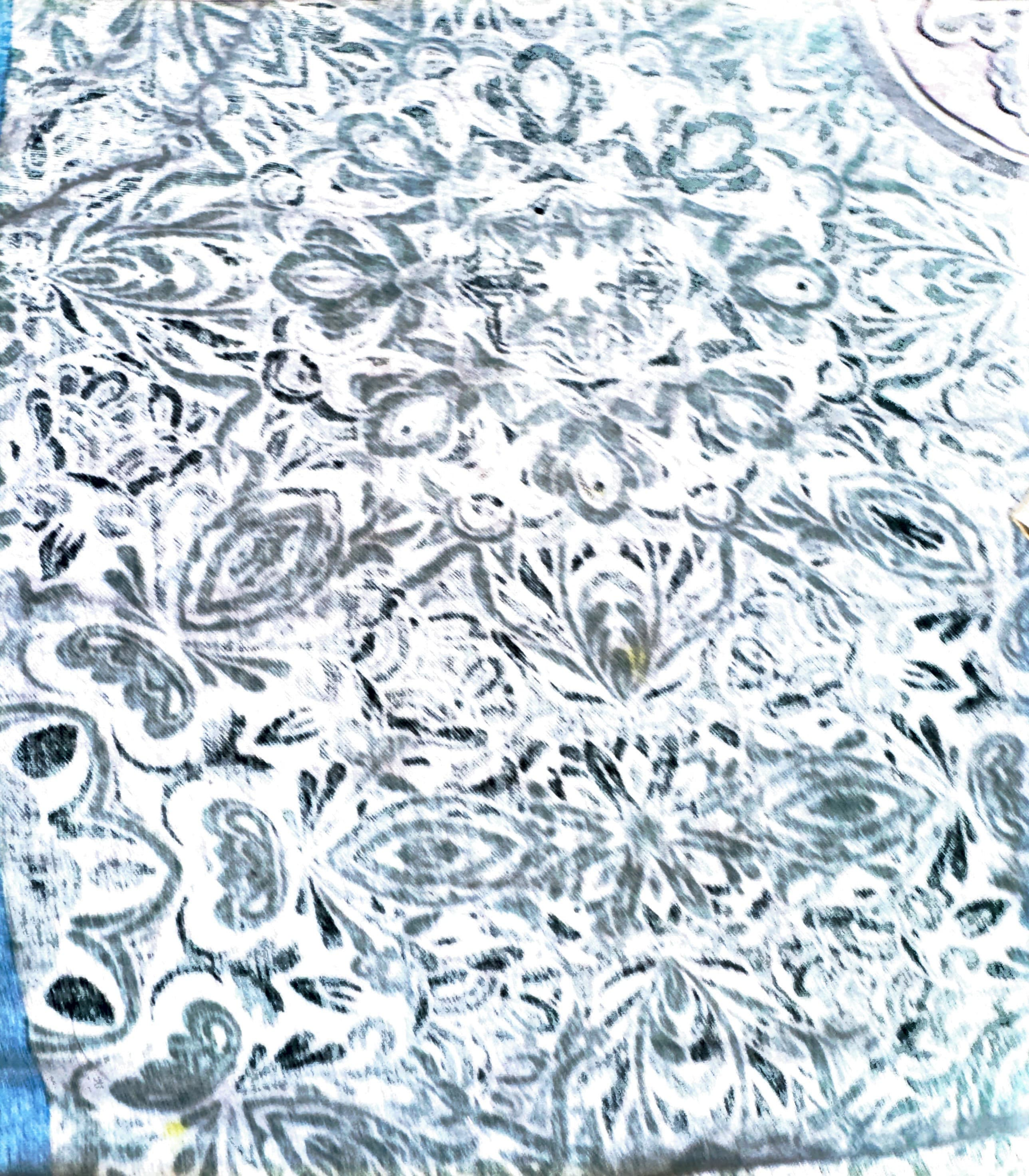

निस्संगता का उत्कृष्टतम उदाहरण है। एक ओर सरोज के लिए कुछ भी न कर पाने का ग्लानिबोध आत्मीयता का सामान्य धरातल है, तो दूसरी ओर उसे उन कर्मों का अर्पण कर उसके तर्पण का प्रयास असामान्य कवि- ~~व्यक्ति~~ वृत्ति का उदाहरण है।

'सरोज- स्मृति" के प्रारंभिक अंशों में 'शोक' नहीं 'विवशता' का चित्रण है एक कवि की सनातन विवशता- जीवन- यापन के लिए मात्र कवि होने की व्यर्थता का अहसास इस विवशता की पृष्ठभूमि में निराला के प्रारंभिक जीवन का संघर्ष भी है। बहुविध आघातों से जूझकर भी न टूटना उनके काव्य- व्यक्तित्व की अद्भुत ~~दुर्दम~~ दुर्दान्तता और जिजीविषा का प्राण है—

" देखें वे, हँसते हुए प्रवर - - - - - वह रण- कौशल।"

मध्य भाग में सरोज के शैशव के स्मृति- चित्र हैं, उनमें विवशता है, वैयक्तिकता है और बीच- बीच में फिर उसी आत्म- संघर्ष के संकेत स्वर—

" लिखता अबाध गति मुक्त छंद।
पर संपादकगण निरानंद"
पास की नोचला हुआ व्यास।"

सवा साल की सरोज जब सवा

तीन साल की होती है, तब निराला के पास पुनर्विवाह के प्रस्ताव आते हैं। निराला का पुनर्विवाह असंभव था मनोहरा उनके लिए पत्नी ही नहीं गुरु भी थी और उसके स्थान पर भला कोई लड़की कैसे बिठाई जा सकती थी? पुनर्विवाह का यह सारा प्रसंग नाटकीय है, रचना- संपृक्त है और संवाद - आधृत है। एक दिन खेल- खेल में सरोज ने पिता की जन्म कुंडली फाड़ दी और मंगली पिता की पत्नी के रूप में अमंगली विमाता का आगमन रुक गया। अनायास ही घटित इस घटना के संबंध में कवि की यह उक्ति - " तू बैठी संचित टुकड़ों पर," बड़ी ही अर्थपूर्ण है। कुंडली पर सरोज का बैठ जाना कवि के लिए संकेत बन गया, प्रतीक बन गया। और एक वर्ष बाद वह अपने पुनर्विवाह की चिंता से पूर्ण मुक्त होकर लावण्य -भार से थरथर सरोज के लिए घर- वर ढूंढने में व्यस्त हो गए। निराला का विवाह - प्रस्ताव संपन्न प्रतिष्ठित कान्यकुब्जों के यहाँ तिरस्कृत होता रहा। निराला द्वारा वर्णित यह प्रसंग न केवल उनकी व्यथा- कथा है, ऐसे पिता की दर्द भरी तस्वीर भी है जो साधनों के अभाव में बेटी के हाथ पीले नहीं कर पाता, उसे मनचाहा घर- वर नहीं दे पाता। उन दिनों जिन मानसिक संघर्षों से निराला गुजरे उनमें सहभागी बनने के लिए भी कोई नहीं था, अकेले ही सारी पीड़ा को पीने के प्रयास में पीड़ा ने

दाहक व्यंग्य का रूप धारण कर लिया। विडंबना तो यह है कि 'सरोज-स्मृति' का यह अंश आज भी उतना ही सार्थक है जितना रचनाकार के समय था। धन-धर्म, जाति-प्रथा, रीति-रिवाज सबका खोखलापन कवि की आँखों के सामने स्पष्ट होने लगा और सबकुछ इस ज्वाला में कवि-अन्तर्दाह से पिघलकर एकाकार हो गया उसमें से विद्रोह की नई मूर्ति ली कवि का यही विद्रोही रूप और उसके नियामक सारे तत्व यदि किसी एक कविता में देखे जा सकते हैं तो- 'सरोज-स्मृति' में। सरोज का परिणय उस समय के अनुसार एक सामाजिक क्रांति के अंतर्गत परिगणित हुआ और इस परिणय में निराला के मानस-जगत में भी नई क्रांतियों, पर निराला के भाग्य में ही शायद सामान्यता लिखी ही नहीं थी, सुख-शांति से जीवन बना ही नहीं था। सरोज चली गई, उन्नीस वर्ष की उम्र में चली गई, एकाकी पिता को शून्य बनाकर।

यह कविता भाव-संश्लेषण की दृष्टि से, भाव-संधि की दृष्टि से, भाव-सबलता की दृष्टि से अनन्य रचना है। शोक कैसे वैयक्तिकता से मुक्त होकर एक कला-सत्य बन जाता है, इसे जानने और समझने के लिए इस कविता का बार-बार पाठ आवश्यक है। 'सरोज-स्मृति' इस दृष्टि से श्रेष्ठ काव्य है।

निराला के भाग्य की यह विडंबना ही थी कि उनकी लाडली बेटी वस्तुतः मृत्यु के हाथों नहीं, अर्थ-पिशाचों के हाथों छिन गई और वे अपने अभिशप्त जन्म पर तप्त आँसू बहाने के लिए विवश हो गए। उनके जीवन की दयनीयता तो तब पराकाष्ठा पर ही पहुँच गई जब अपनी पुत्री की मृतात्मा के तर्पण में उन्हें केवल गत कर्मों के अर्पण से ही संतुष्ट होना पड़ा। यही कारण है कि 'सरोज-स्मृति' में एक ओर वैयक्तिक दुःखों की पराकाष्ठा पश्चाताप की अग्नि में धधकता पिता-हृदय और पुत्री की मृत्यु का ताप कलात्मकता की अमरता पाकर वर्णित है, तो दूसरी ओर विसंगतियों, विपदाओं और विभीषिकाओं के प्रति एक दबा हुआ आक्रोश, एक असहनीय जीवन दशा को सहने के लिए लाचार मानसिक अवस्था की अजीबोगरीब किन्तु सच्ची अभिव्यक्ति है। कहना चाहिए कि 'सरोज-स्मृति' निराला के कवि-जीवन की सबसे बड़ी आय है।

निराला ने इस कविता में दिवंगता सरोज की स्मृतियाँ एवं अपने निजी जीवन की विडंबनाओं को अभिधात्मक रूप में उपस्थित किया है। रूप-विधान में इतिवृत्तात्मकता के साथ-साथ आत्माभिव्यक्ति की प्रमुखता के कारण यह कविता अप्रत्याशित रूप से विलक्षण हो गई है। यही नहीं सामाजिक जीवन की विसंगतियाँ, आर्थिक जगत की धींगामुश्तियाँ, नियति प्रताड़ित मानव की विवशताओं के प्रति आक्रोश, असंतोष और ग्लानि

की जैसी उज्ज्वल अभिव्यक्ति इस कविता में हुई है वह अभूतपूर्व है। अपने व्यक्तित्व के प्रति अतिशय संवेदनशीलता के साथ-साथ परंपरा एवं देशकाल के प्रति इतनी सजगता भी कम आश्चर्यजनक नहीं है। कवि ने संपूर्ण कविता में अपने भावोद्गारों की अभिव्यक्ति में मानसिक तरंगों के उत्थान-पतनों, मानवीय अन्तर्संबंधों की पहचान में टूटते-जुड़ते चित्रों के दीर्घ और लघु क्षणों और अनुभूतियों को यथार्थ की छोटी-छोटी किन्तु भावयुक्त पकड़ देकर इसे ~~एक~~ नवीन प्रयोग से मंडित किया है। मृत्यु की स्वीकृति, चेतना की सघन गहराई से सत्य को उपलब्ध हुआ कवि और अतीत के टूटते स्वप्न, भविष्य की अनाम यात्रा, वर्तमान के डगमगाते पाँव, व्यक्ति की निर्वैयक्तिक साधना इस कविता की आत्मा में अन्तः धाराओं के रूप में प्रवाहित हैं, जबकि कविता का शरीर दशाओं और द्वेष के विरुद्ध प्रतिबद्ध है। कविता अपनी मूलता में सरोज-स्मृति को समर्पित है। इस प्रकार पिता और दुहिता के अन्तर्संबंधों की अर्थवत्ता में अपनी आत्म-~~क~~ व्यथा की करुण-कथा के द्वारा हिन्दी कविता को एक 'अमर' शोकगीत की अनुपम भेंट देकर अपनी दुहिता के प्रति जो प्रेमोपहार दिया है वह वेदना की साँस पाकर हिन्दी भास्कर साहित्य में स्पृहणीय है कुल मिलाकर यह कविता मात्र एक शोकगीत ही नहीं, उससे कुछ अधिक है।